

# दक्षिण पूर्वी एशिया में भारत के लिए संभावनाएं और चुनौतियां

*Babulal Sundaria\**

## सारांश

भारत की आजादी के समय विश्व दो खेमों में विभाजित था, जिसके कारण भारत और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के मध्य साक्षर्त्वों में शिथिलता रही। 1991 में उदारीकरण की नीति अपनाने के बाद दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों का महत्व भारत के लिए बढ़ गया है। आज भारत और मध्य पूर्वी एशिया के देश विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आजादी के बाद भारत और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंधों को रेखांकित करते हुए वर्तमान समय में सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में संभावनाओं को देखना है। जिसके अंतर्गत भारतीय श्रमिकों एवं प्रवासी भारतीयों की भूमिका, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक जुड़ाव, सेना, प्रतिरक्षा, पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को देखना है।

शोध पत्र के दूसरे भाग में भारत और दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के बीच अवरोध के मुद्दों और क्षेत्रों का विश्लेषण किया गया है। जिसमें इन देशों में अमेरिका एवं चीन की सैन्य एवं व्यापारिक उपस्थिति, भारत के प्रति इन देशों में विश्वास की कमी जैसे विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण किया गया है। यह शोध पत्र भारत सरकार की विभिन्न रिपोर्ट, समाचार पत्रों, शोध पत्रों, विभिन्न स्वायत वैश्विक संस्थाओं के आंकड़ों और सरकारी दस्तावेजों के आधार पर उन कारकों के संयोजन की पहचान करता है जो भारत और मध्य पूर्वी एशियाई देशों के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक, सैन्य प्रतिरक्षा, पर्यटन इत्यादि क्षेत्रों में संभावनाओं को बढ़ावा देते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के काल में भारत और मध्य पूर्वी एशियाई देशों के बीच संबंधों में निरंतरता के साथ, विभिन्न क्षेत्रों में संबंधों की गतिशीलता में सकारात्मक तेज़ी देखी गई है। आज भारत और मध्य पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के बीच सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं, साथ ही आतंकवाद, पर्यावरण

\* PhD Scholar, Department of Political Science (Jai Narayan Vyas University, Jodhpur), Lichana, Didwana-Kuchaman, Rajasthan, Pincode 341533, Mobile No.- 7296921770, Email- babukct1999@gmail.com

संकट, शरणार्थी, चीन और अमेरिका की इस क्षेत्र में बढ़ती भूमिका के बावजूद भारत इस क्षेत्र में सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ सकता है।

## प्रस्तावना

दक्षिण-पूर्व एशिया में ग्यारह देश शामिल हैं जो पूर्वी भारत से चीन तक फैले हुए हैं, जो मुख्य भूमि(Mainland) और द्वीप क्षेत्रों(Island) में विभाजित हैं। मुख्य भूमि (स्यांमार, थाईलैण्ड, लाओस, कंबोडिया और वियतनाम) वास्तव में एशियाई महाद्वीप का ही विस्तार है। द्वीप या समुद्री दक्षिण पूर्व एशिया में मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, फिलीपींस, ब्रुनेई और पूर्वी तिमोर (पूर्व में इंडोनेशिया का हिस्सा) राष्ट्र शामिल हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया की एक विशिष्ट विशेषता इसकी सांस्कृतिक विविधता है। आज दुनिया में बोली जाने वाली छह हज़ार भाषाओं में से, अनुमानतः एक हज़ार दक्षिण-पूर्व एशिया में बोली जाती हैं। (1) आज दक्षिण- पूर्वी एशिया आसियान और अन्य आर्थिक संस्थाओं के माध्यम से तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र है। चीन, रूस, अमेरिका सहित विश्व की बड़ी शक्तियां इस क्षेत्र में अपना वैचारिक और सामरिक प्रभाव बढ़ाने में लगी हुई हैं।

भारत के दक्षिण-पूर्वी देशों के साथ संबंधों को तीन काल अवधियों में विभाजित करके समझ सकते हैं। प्रथम काल अवधि आजादी से पहले 1940 के दशक के अंत में आरम्भ हुई, जब भारत स्वयं को एक एशियाई शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा था। इस अवधि का अंत सन 1962 के भारत चीन युद्ध से हुआ। (2) इस अवधि में विश्व के विभिन्न भागों में वित्तनिवेशीकरण की प्रक्रिया जारी थी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने साम्राज्यवाद की पश्चिमी नीति का विरोध किया। भारत ने इंडोनेशिया की स्वतंत्रता के हितों को बढ़ावा देने के लिए एशियाई सम्मेलन आयोजित किया। स्वतंत्रता के समय यूनाइटेड किंगडम तथा अमेरिका के बाद दक्षिण पूर्व एशिया भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। (3) भारतीय अप्रवासियों की समस्या को छोड़कर भारत के राष्ट्रीय हितों का तालमेल दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्रों के साथ सौहार्दपूर्ण था। परंतु भारत का रूस की तरफ झुकाव तथा 1962 के युद्ध में चीन द्वारा पराजय ने भारत की वैश्विक छवि को नुकसान पहुंचाया जिसके फलस्वरूप दक्षिण पूर्व एशिया में भारत की सक्रिय भागीदारी कम हुई और वैचारिक रूप से भारत की वैश्विक पटल पर हानि

पहुंची। अमेरिका के साथ दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की नजदीकी बढ़ती गई दूसरी ओर रूस व चीन के खिलाफ उन देशों में उग्र भावना देखी गई जिसके फलस्वरूप भारत की भूमिका दक्षिणपूर्व एशिया में दिन-ब-दिन कम होती चली गई।

दूसरी अवधि 1962 से लेकर शीत युद्ध के अंत तक कहीं जा सकती है। वियतनाम में अमेरिकी हस्तक्षेप की भारत द्वारा आलोचना के कारण दक्षिण पूर्वी एशिया राष्ट्र भारत को शंका की विष्टि से देखने लगे। 1967 में ब्रिटेन ने स्वेज नहर के पूर्व से बाहर निकालने की घोषणा की। भारतीय नौसेना ने शीघ्रता से ब्रिटिश नौसेना के क्षेत्र से निकलने के बाद उसके कार्यों को संभालने के अपने मंतव्य की घोषणा की, जिसके परिणाम स्वरूप दक्षिण पूर्व एशिया के देश भारत के प्रति आशंकित हो गए। (4) 1980 के दशक के अंत में भारत ने श्रीलंका तथा मालदीव में सीधा हस्तक्षेप किया, और भी बहुत से मुद्दे थे जिन पर दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और भारत के मध्य रिश्ते खराब हुए। सिंगापुर के राष्ट्रपति ली कुआन यू भारत की इस क्षेत्र में सैनिक उपस्थिति का समर्थन कर रहे थे। (5) इस अवधि के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था की सुस्ती और भारतीय सैन्य उपकरणों में आधुनिकता की कमी के कारण भारत इस क्षेत्र में कोई प्रभाव भूमिका निभाने में असफल रहा।

तीसरी अवधि 1990 के दशक के अंत में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई तब से लेकर वर्तमान काल तक कहीं जा सकती है। इस दौरान भारत ने अमेरिका के साथ अपने रिश्तों को मजबूत किया जिसके चलते दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र का विश्वास भारत की तरफ बढ़ता गया। भारत में लुक ईस्ट पॉलिसी तथा गुजराल सिद्धांत के माध्यम से अपने पड़ोसी देशों विशेषकर दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों से संबंधों में तेजी लाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारत ने लुक ईस्ट पॉलिसी को व्यावहारिक रूप देते हुए एक्ट ईस्ट पॉलिसी में बदल दिया। कोविड के दौरान भारत कि वैश्विक मंच पर सक्रियता ने दक्षिण पूर्व एशिया में संभावनाओं के अपार दरवाजे खोले हैं, साथ में आज बहुत सारी चुनौतियां भी दक्षिण एशिया में भारत के सामने हैं।

## संभावनाएं

भारत के दक्षिण पूर्व एशिया से संबंध प्राचीन काल से रहे हैं। इस क्षेत्र का मुख्य भूमि (Mainland) भाग भाषाई रूप से तीन महत्वपूर्ण परिवारों में विभाजित है, ऑस्ट्रो-एशियाई, ताई और तिब्बती-बर्मी। इन परिवारों से संबंधित भाषाएँ पूर्वोत्तर भारत और दक्षिण-पश्चिमी चीन में भी पाई जाने की प्रबल संभावनाएं हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया की मुख्य भूमि के बाकी हिस्सों में और मलय-इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के पश्चिमी क्षेत्रों में, बंगाल की खाड़ी के पार व्यापार के विस्तार का मतलब था कि भारतीय प्रभाव स्पष्ट वहां पर पड़ा। इन क्षेत्रों में शासकों और दरबारियों ने हिंदू धर्म या बौद्ध धर्म के रूपों को अपनाया और एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा दिया जिसमें स्थानीय समाज के पहलुओं के साथ आयातित विचारों को मिलाया गया।(6) समुद्री व्यापार संबंधों ने भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच दीर्घकालिक संबंधों की नीव रखी। इस संपर्क के परिणामस्वरूप व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुआ और अंततः दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थानीय संस्कृति के साथ भारतीय संस्कृति का मिश्रण हुआ। भारत और दक्षिण पूर्व एशिया ने ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली जैसी पश्चिमी शक्तियों द्वारा उपनिवेशीकरण का अतीत भी साझा किया है। 1870 के दशक के बाद दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवासियों का भारी प्रवाह देखा गया, जिनमें से अधिकांश गिरमिटिया मजदूर थे जो औपनिवेशिक स्वामियों के लिए काम करते थे। इन प्रवासियों का प्रमुख वर्ग तमिलों का था। पाली, संस्कृत, तमिल जैसी भारतीय भाषाओं का प्रयोग प्राचीन समय में दक्षिण पूर्वी एशिया में किया जाता था।(7) आज भारत साहित्यिक और पुरातात्त्विक अनुसंधान के माध्यम से प्राप्त जानकारी से इन देशों के आम लोगों के साथ अपने संबंध को मजबूत बना सकता है। ऐसा करके भारत इन देशों में सॉफ्ट पावर का विस्तार करके बड़ी महाशक्तियों के प्रभाव को कम करके अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित कर सकता है।

इन देशों में भारतीय पुराण कथाओं, महाभारत, रामायण, बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म का प्रभाव स्पष्ट तौर से देखा जा सकता है। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक के हवाई अड्डे का नाम 'सुवर्णभूमि' रखा गया है। समुद्र मंथन को कंबोडिया के अंगकोरवाट के प्रसिद्ध मंदिर में भी दर्शाया गया है। गरुड़ (एक देवता जो हिंदू भगवान विष्णु की सवारी या वाहन है) थाईलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक है।(8)

1991 में भारत के उदारीकरण की नीति अपनाने के बाद भारत की दक्षिण एशिया में सक्रियता बढ़ी है। भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता, जिस पर 13 अगस्त 2009 को हस्ताक्षर किए गए थे, छह साल की बातचीत के बाद 1 जनवरी 2010 को लागू हुआ। एफटीए पर हस्ताक्षर करने के बाद से आसियान के साथ भारत का कुल व्यापार 2018-19 में 96.79 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2025 तक 300 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देश चीन की मुखरता को ध्यान में रखते हुए, उस पर आर्थिक निर्भरता से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं। (9) भारत इन देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूती प्रदान करके एक ओर चीन को इस क्षेत्र की भू राजनीति से दूर रख सकता है, दूसरी ओर यूरोप और अमेरिका में बढ़ते आक्रामक राष्ट्रवाद जिसका सीधा असर भारतीय अर्थव्यवस्था और श्रमिकों पर पड़ेगा, का विकल्प तलाश सकता है।

10 अक्टूबर 2024 को भारत और आसियान ने वियनतियाने, लाओ पीडीआर में 21वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन के अवसर पर भारत और आसियान के बीच संभावनाओं के क्षेत्र में अपने इरादे जाहिर किए। जिसमें कहा गया कि साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता में मजबूत विश्वास और कानून के शासन और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों के प्रति साझा प्रतिबद्धता के आधार पर क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए भारत-आसियान काम करेंगे। आसियान-भारत संयुक्त वक्तव्य के कार्यान्वयन की दिशा में प्रयासों की सराहना करते हुए; बहुपक्षवाद, संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निहित उद्देश्यों और सिद्धांतों तथा अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति सम्मान को बनाए रखने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की। (10) आज भारत और दक्षिण पूर्वी एशियाई देश बहुत से मुद्दों पर एक समान हित साझा करते हैं, जैसे समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद निरोध, साइबर सुरक्षा, सैन्य चिकित्सा, अंतरराष्ट्रीय अपराध, रक्षा उद्योग, मानवीय सहायता और आपदा राहत, शांति स्थापना, सतत विकास, अनुसंधान और विकास। सहयोग के क्षेत्रों के साथ आज भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के बीच बहुत से मुद्दों को लेकर अविश्वास और टकराहट भी है।

## चुनौतियां

आज भारत को दक्षिण पूर्व एशिया के साथ अपने संबंधों में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें शामिल हैं- क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव से तीव्र प्रतिस्पर्धा, सीमित कनेक्टिविटी, कुछ दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में राजनीतिक अस्थिरता, कम व्यापार क्षमता, दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवाद। आसियान देशों के साथ मजबूत रणनीतिक साझेदारी, साझा इतिहास और भौगोलिक जुड़ाव के बावजूद भारत को पिछले नीतिगत निर्णयों और आंतरिक मुद्दों के कारण इस क्षेत्र में अपनी क्षमता का पूरी तरह से दोहन करने के लिए संघर्ष करना पड़ा है, जिससे दक्षिण पूर्व एशिया के साथ उसके जुड़ाव में बाधा उत्पन्न हुई। भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के बीच बहुत से मुद्दों पर असहमति है। पहला, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के अनुसार, जनवरी से अप्रैल 2024 तक, भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से उत्पन्न साइबर घोटालों के कारण महत्वपूर्ण वित्तीय नुकसान हुआ, जिनमें 62,587 निवेश घोटालों से लगभग 16.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर, 20,043 ट्रेडिंग घोटालों से 2.65 मिलियन अमेरिकी डॉलर, 4,600 डिजिटल गिरफ्तारी घोटालों से 1.43 मिलियन अमेरिकी डॉलर और 1,725 डेटिंग घोटालों से 0.16 मिलियन अमेरिकी डॉलर। (11) आज साइबर सुरक्षा विश्व के सामने सबसे बड़ा मुद्दा है, भारत के लिए यह एक गंभीर समस्या बनी हुई है।

दूसरी ओर पिछले छह वर्षों से, ISEAS-यूसुफ इशाक संस्थान के दक्षिण पूर्व एशिया की स्थिति सर्वेक्षणों में पाया गया है कि क्षेत्र के अभिजात वर्ग लगातार दक्षिण पूर्व एशिया में अपने रणनीतिक, राजनीतिक या आर्थिक प्रभाव के मामले में भारत को सभी प्रमुख शक्तियों में सबसे निचले स्थान पर रखते हैं। (12) इससे जाहिर है कि भारत अब भी दक्षिण एशिया में बौद्धिक पहुंच बनाने में कमज़ोर साबित हुआ है। निर्यात पर निर्भर दक्षिण पूर्व एशियाई देश व्यापक रूप से उदार अंतरराष्ट्रीय व्यापार का समर्थन करते हैं, जबकि भारत अक्सर अपने बाजारों को खोलने के लिए हिचकिचाता है। आईएसईएस रिपोर्ट के अनुसार, क्राड के आसियान के प्रयासों के पूरक होने की धारणा में कमी आई है; इसके बजाय इसे आसियान की केंद्रीयता को खतरे में डालने और साथ ही बीजिंग को भड़काने के रूप में देखा जा रहा है। (13) ट्रंप के सत्ता में आने

और अमेरिका के आक्रमण राष्ट्रवाद की नीति को देखते हुए कॉड की सफलता संदिग्ध है।

आज दक्षिणी पूर्वी एशिया में चीन की मौजूदगी भारत और पश्चिमी देशों के लिए खतरे का सकेत है। जोआन लिन ने अपने लेख "घटते प्रभाव और बढ़ती महत्वाकांक्षाओं की भारत की रणनीतिक पहली" में भारत की विवशता को बताते हुए लिखा भारत की महत्वाकांक्षाएँ वैध हैं, लेकिन संसाधनों की कमी और अन्य घरेलू प्राथमिकताओं में व्यस्तता को देखते हुए, यह एक कठिन पहाड़ी पर चढ़ना होगा। इस क्षेत्र में एक रणनीतिक खिलाड़ी के रूप में उभरने के लिए भारत को अभी लंबा रास्ता तय करना होगा।(14) चीन की क्षेत्रीय मुखरता, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में समुद्री विवादों के संबंध में, आसियान पर भारी कूटनीतिक, राजनीतिक और सैन्य दबाव डाल रही है। क्षेत्र के लिए मामले को और अधिक जटिल बनाने वाली बात है संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) का क्षेत्र में अपनी सैन्य प्रधानता को पुनः प्राप्त करने का वृद्ध संकल्प और परिणामस्वरूप पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में दोनों देशों की सशस्त्र सेनाओं के बीच तनाव।(15) भारत के लिए इस क्षेत्र में चीन और अमेरिका की उपस्थिति, साथ में घटता व्यापार घटा चिंता का विषय है।

## निष्कर्ष

1990 के दशक की शुरुआत में शीत युद्ध के बाद महाशक्तियों के बीच बढ़ते सामंजस्य और आर्थिक वैश्वीकरण के उदय ने दक्षिण एशिया के देशों ने आसियान के नेतृत्व में क्षेत्रीय संस्था-निर्माण और आर्थिक सहयोग के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा कीं। इस सकारात्मक वैश्विक और क्षेत्रीय माहौल ने भारत को आसियान के नेतृत्व वाली संस्थाओं में धीमे लेकिन निरंतर एकीकरण की अनुमति दी। आसियान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार बना हुआ है, भारत का अपने वैश्विक व्यापार का 11 प्रतिशत हिस्सा आसियान के साथ है। 2023-24 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 122.67 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच सकता है। भारत-आसियान व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (CECA) में माल, सेवाओं और निवेश को कवर करने वाले तीन प्रमुख समझौते शामिल हैं। आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौते (AITIGA) पर हस्ताक्षर

करने के बाद आसियान के साथ भारत के व्यापार में आश्वर्यजनक वृद्धि हुई। वित्त वर्ष 2009 और वित्त वर्ष 2023 के बीच, आसियान से भारत में आयात में 234.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि भारत से निर्यात में केवल 130.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिससे भारत का व्यापार घाटा 2011 में समझौते के लागू होने के समय सालाना 7.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2023 में लगभग 44 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।<sup>(16)</sup>

यूरोप और अमेरिका में आज आक्रामक राष्ट्रवाद हावी है जिसके चलते व्यापार में सुस्ती आने की संभावना बनी हुई है। ऐसे में भारत को नई बाजार और उपभोक्ताओं की जरूरत है जो दक्षिणपूर्व देशों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने से प्राप्त हो सकती है। इसके अलावा आज मध्य पूर्व एशिया में भी अशांति देखी जा रही है जिसके कारण भारतीय श्रमिकों की मांग मध्य पूर्व में घट सकती है, जिसके विकल्प के रूप में भारत को दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ श्रमिक समझौते करने की जरूरत है।

## संदर्भ

Andaya, B. W. (n.d.). Introduction to southeast asia. Asia Society. Retrieved on 2025, January 24 from <https://asiasociety.org/education/introduction-southeast-asia>

ASEAN-India Joint Statement on Cooperation on the ASEAN outlook on the Indo-Pacific for peace, stability, and prosperity in the region. (2024b, October 10). <https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl%2F34425%2FASEANIndia+Joint+Statement+on+Cooperation+on+the+ASEAN+Outlook+on+the+IndoPacific+for+Peace+Stability+and+Prosperity+in+the+Region=>

B. W. (n.d.). Introduction to southeast asia. Asia Society. Retrieved on 2025, January 24 from <https://asiasociety.org/education/introduction-southeast-asia>

Banerjee, S. (2024, July 30). Cyber scams and trafficking: India's Southeast Asian Challenge. Orfonline.org. <https://www.orfonline.org/expert-speak/cyber-scams-and-trafficking-india-s-southeast-asian-challenge>

Bhardwaj, S. (2024, September 16). India's struggle to find a meaningful role in Southeast Asia. – The Diplomat. <https://thediplomat.com/2024/09/indias-struggle-to-find-a-meaningful-role-in-southeast-asia/>

Bhowmick, S. (2024, August 31). India's evolving trade strategy with ASEAN. Orfonline.org. <https://www.orfonline.org/expert-speak/india-s-evolving-trade-strategy-with-asean>

Lin, J. (2024, June 28). State of southeast asia 2024: India's strategic conundrum of diminished influence and rising ambitions. FULCRUM. <https://fulcrum.sg/asianfocus/state-of-southeast-asia-2024-indias-strategic-conundrum-of-diminished-influence-and-rising-ambitions/>

Mohan, C. R. (2024, October 14). ISAS.NUS.EDU.SG. <https://www.isas.nus.edu.sg/papers/india-and-asian-in-a-changing-world/>

Ollapally, D. M. (2025, January 23). India's Southeast Asia Policy: Hype or hope? Rising Powers Initiative. <https://www.risingpowersinitiative.org/2025/01/23/indias-southeast-asia-policy-hype-or-hope/>

Sharma, V. B. (2024, November 30). India and Southeast Asia – expanding avenues for economic engagement & sustainable development. Diplomatist. <https://diplomatist.com/2024/11/30/india-and-southeast-asia-expanding-avenues-for-economic-engagement-sustainable-development/>

Singh , S. (2023, December 27). Indian Council of World Affairs. Mapping India's Historical Ties with Southeast Asia - Indian Council of World Affairs (Government of India). [https://www.icwa.in/show\\_content.php?lang=1&level=1&ls\\_id=10322&lid=6583](https://www.icwa.in/show_content.php?lang=1&level=1&ls_id=10322&lid=6583)

Singh , S. (2023, December 27). Indian Council of World Affairs. Mapping India's Historical Ties with Southeast Asia - Indian Council of World Affairs (Government of India). [https://www.icwa.in/show\\_content.php?lang=1&level=1&ls\\_id=10322&lid=6583](https://www.icwa.in/show_content.php?lang=1&level=1&ls_id=10322&lid=6583)

गांगुली, सुमित, (2018), भारत की विदेश नीति : पुनरावलोकन और संभावनाएं (प्रथम हिंदी संस्करण). Oxford University Press. P.126,132

गांगुली, सुमित, (2018), भारत की विदेश नीति : पुनरावलोकन और संभावनाएं (प्रथम हिंदी संस्करण). Oxford University Press. P.132

गांगुली, सुमित, (2018), भारत की विदेश नीति : पुनरावलोकन और संभावनाएं (प्रथम हिंदी संस्करण). Oxford University Press. P.134